रिकॉर्डः–आखिर वो दिन आया आज..... ॐ पिताश्री 6/8/1964
ओमशांति। यह अपनी पहचान दी– मैं शान्त स्वरूप हूँ। मेरा स्वधर्म ही शान्त है। मेरे बाप का भी स्वधर्म शान्त है। फिर साइलेंस से टॉकी कब बनते हैं? जब ऑरगन्स मिलते हैं। ऑरगन्स तो मिलते ही आते हैं। एक शरीर छोड़ा फिर दूसरे ऑरगन्स मिलते हैं। बाप आकर अपना परिचय देते हैं। गरीब निवाज़ तो है ना। भारत में सब गरीब ही हैं। साहुकार तो हैं सतयुग में। सबसे साहुकार कौन है? हर एक बात नटशेल और डिटेल में समझाई जाती है। अभी तुम बच्चे गॉड फादर बाप को जान गए हो बाप के द्वारा। बच्चे सदैव बाप का परि(चय) बाप द्वारा ही पावेंगे। बाप जब बच्चा पैदा करे तब उनको अपना परिचय दे। सभी मनुष्य मात्र बच्चे हैं। बच्चे कहते हैं– ओ गॉड फादर! ब्रदर्स कहेंगे– ओ गॉड फादर! जो भी मनुष्य मात्र हैं, जीवात्माएँ तो बहुत हैं ना, 84 लाख जीवात्माएँ हैं, उनमें जो मनुष्य हैं, उन्हों की जीवन कहानी बताई जाती है। जानवरों की तो नहीं बतावेंगे। मनुष्य ही समझ सकते हैं। जीवात्माएँ तो बहुत हैं ना। 84 लाख कहेंगे। जीव पिण्ड को कहा जाता, फिर किसका भी हो। अभी तुम बच्चे जानते हो कि बाप को कोई भी नहीं जानते। ओ गॉड फादर कहते तो हैं। ओ प०पि०प० कहते हैं ना। अब बाबा प्रश्न पूछते हैं बच्चों से कि जब हम सतयुग में होंगे तो ओ गॉड फादर वा ओ प०पि०प० कहेंगे? इन बातों में ख्याल करना है। बड़ी गुह्य समझने की बातें हैं। सतयुग में जब दैवी जीवात्माएँ हैं, वो जानती हैं कि हमारा बाप गॉड है? यह पहचान होगी? (नहीं)। वहाँ ओ गॉड फादर नहीं कहते। तो क्या नास्तिक बन जाते हैं?

यहाँ तो बाप को पुकारते हैं; परन्तु वो कौन है, उनसे क्या मिलता है, यह कोई नहीं जानते। पुकारते हैं– ओ गॉड फादर; क्योंकि दुख है तब बाप को पुकारते हैं। समझते हैं; परन्तु जानते नहीं हैं। यह बहुत विचार–सागर–मंथन करने की बातें हैं। यह प्रश्न तुम बच्चों से ही पूछा जाता है। सभी कहते हैं 'ओ गॉड फादर', फिर कोई कहे ''ईश्वर सर्वव्यापी है'' तो सब फादर हो गए, फिर किसको पुकारेंगे? वर्सा तो बाप से ही ले सकते। बच्चे पुकारते हैं। बाप कैसे पुकारेगा! समझाया जाता है– परमपिता को जानते हो? कहते, नहीं जानते। अरे, तुम कहते हो ना– ओ गॉड फादर। प०पि०प० तो ज़रूर जानते हो तब तो कहते हो। फिर पूछते क्यों हो? अगर उनको जानते नहीं हो तो क्यों कहते हो 'ओ गॉड फादर'। बुद्धि में रहता है ऊपर में कोई है ज़रूर; परन्तु उनकी बायोग्राफी को नहीं जानते। बाप तो मोस्ट बिलवेड है। उनसे सुख मिलता है तब घड़ी–2 पुकारते हैं। यह फिर उल्टा ज्ञान मिला है, आत्मा सो परमात्मा है। कोई भी नहीं जानते। ऋषि–मुनि भी बेअन्त–2 करते गए। हम जानते नहीं हैं; परन्तु है ज़रूर। तो उनको नास्तिक भी नहीं कह सकते। समझते हैं कि फादर है। बुद्धि वण्डर खाती है, यह क्या होता है जो बाप को जानते नहीं! तुम बच्चे कहते हो 'बाबा', तो तुम वारिस हो ना। गॉड फादर कहते हो। अच्छा, फादर का वर्सा क्या मिलता है? बायोग्राफी बताओ बाप की। बाप फिर सर्वव्यापी कैसे हो सकता? उनसे तो कोई मतलब नहीं निकलता। फादर कहने से तो वर्सा भी बताना चाहिए। अगर वर्सा न बताते तो बुद्धू हैं। लौकिक फादर का तो झट ऑक्युपेशन बतावेंगे ना। गॉड फादर का ऑक्युपेशन क्या है? गॉड फादर तो हर एक कहता है। अब बाबा ने पूछा– वहाँ तुम फादर को जानेंगे? यहाँ तो समझते हैं; लेकिन जानते नहीं हैं; परन्तु वहाँ तो समझते भी नहीं कि गॉड फादर होता है। आस्तिक और नास्तिक की समझानी बाप अभी देते हैं। इनमें भी बहुत गुह्य बातें हैं। यह तो अच्छी रीति जानते हैं– हम आत्मा हैं, एक पुराना शरीर छोड़ दूसरा न(या) शरीर प्रिंस का लेंगे। प्रजा वाला दूसरा जन्म प्रजा में ही लेंगे जहाँ होगा। समझेंगे हम आत्मा यह शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। वहाँ आयु तो सबकी बड़ी होती है। जब बूढ़े हो जाते हैं तब समझते हैं हमको शरीर छोड़ना है। यह एक लॉ हो जाता। जिस पर सर्प का मिसाल सन्यासियों ने दिया। यहाँ अभी तुम समझते हो, हमको वापिस घर जाना है, इसलिए अपने घर को याद करना है। सतयुग में घर को याद नहीं करेंगे। तो अगर कोई कहे 'गॉड फादर सर्वव्यापी है', बोलो– क्या तुम भी फादर हो? फादर शब्द कहा तो तुम ज़रूर बच्चे ठहरे ना। कहते हैं– गॉड फादर कहाँ है? उनसे हम कैसे मिले? वो कहाँ है? तब पिता क्यों कहते हो? इन बातों को कोई समझ नहीं सकते। तुम बतला सकते हो। तुम हो पण्डे, बाप का परिचय देने वाले; क्योंकि तुमको परिचय मिला है। वहाँ हम सबको कहते हैं, नास्तिक हैं। सतयुग में तो हम आस्तिक भी नहीं कह सकते; क्योंकि वहाँ तो न समझते हैं, न जानते हैं। सिर्फ आत्मा को जानते हैं– हम आत्मा हैं, एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। शरीर छोड़ने पर रोते–रड़ते नहीं और यहाँ फिर कहेंगे– जितना हो सके हम जीते रहें। दवाई आदि कर संभालते आवेंगे। वहाँ तो समझेंगे– पुराने शरीर को रख क्या करेंगे! यहाँ तो शरीर में भी मनुष्यों का मोह रहता है। जब दुखी होते हैं तो कहते हैं, ऐसा कोई डोज़ दो जो हम यह शरीर छोड़ लेवें। रोग से छूट जावेंगे; परन्तु शरीर में, बच्चों आदि में मोह रहता है। अरे, तुम समझते हो यह पुराना शरीर तो कोई काम का न है। विलायत में घोड़े को देखते हैं, कोई काम का न है तो झट घोड़े को शूट कर लेते हैं। कौन बैठ फालतू चीज़ से माथा मारेगा! उनमें यह बुद्धि है। मनुष्यों में तो ज्ञान नहीं है ना। यहाँ तुम बच्चे तो कमाई कर रहे हो। भल कुछ भी होवे, हम कहेंगे, बाबा से तो वर्सा लेवे। जितना जीते रहें उतना अच्छा है। कुछ न कुछ सुनें तो सही। आत्मा को पता है, हमारे शरीर को दुख है। इस समय तुम ऐसे नहीं कहेंगे, शरीर छोड़े तो छूटें। बाप कहते हैं– सुनते रहो तब तो

भविष्य के लिए प्रालब्ध बनावेंगे। ऐसे बहुत दुखी से फिर सुखी बन जाते हैं। पाकिस्तान का (माम)ला हुआ, कितने दर–बदर हुए, फिर तकदीर जागी तो साहुकार बन पड़े। यहाँ तो देखो कौन आए हैं! जि(स)से तुम सदा सुखी बनते हो उनको जानते हो? प०पि०प० हमको पढ़ाय रहे हैं। फिर बाबा वापिस अपने साथ ले जावेगा। सन्यासी–उदासी आदि कोई भी धर्म वाले को यह नॉलेज नहीं। बाप ही बैठ अच्छी–2 बातें समझाते हैं। बाप स्वर्ग का मालिक बनाने आए हैं तो क्यों न हम बनेंगे। तुम जानते हो, बरोबर बाबा डबल सिरताज बनाते हैं। कृष्ण ने यह राज्य कब और कहाँ से लिया, यह तुम अभी जानते हो। दुनिया नहीं जानती कि भारत कैसे स्वर्ग बना था। और कोई नहीं जानते। ल०ना० सतयुग के महाराजा–महारानी थे ना। उन्हों को यह वर्सा कैसे मिला? सतयुग में कितने हीरे–जवाहरात रहते हैं। कलियुग की अंत में तो कुछ नहीं है। उन्हों को वर्सा कैसे मिला? ऐसे तो नहीं कहेंगे, द्वापर में श्री कृष्ण ने ऐसे कर्म किए। वो तो है सतुयग का प्रिंस। तो ज़रूर कलियुग अंत में सीखे होंगे। बाप कहते हैं– मैं आता हूँ पतितों को पावन बनाने। फिर यह नॉलेज गुम हो जाती। बाबा ने बताया, वहाँ कुछ भी पता न होगा। सिर्फ आत्मा को जानते होंगे। यहाँ भ(क्त) जितना भगवान को जानते हैं उतना भी वहाँ नहीं जानते। यहाँ के शूद्र कंगाल मनुष्य फिर भी आस्तिक हैं। समझते हैं, गॉड फादर है। सतयुग में याद भी नहीं करते, जानते भी नहीं। कितनी वण्डरफुल अच्छी–2 समझने की बातें हैं। बाप बैठ समझाते हैं तो कितना गद–2 होना चाहिए। यहाँ तुम सन्मुख सुनते हो। सन्मुख में अच्छा मज़ा है। इसलिए अब तो टेप भी निकली है। फिर टेलीविजन भी निकलेंगे। तुम बच्चे समझते हो प०पि०प० हमको पढ़ाय रहे हैं। भारत में ही भगवानुवाच्य है। क्राइस्ट आदि के लिए कब भगवानुवाच्य नहीं कहते। यहाँ गाया हुआ है। शिवजयन्ती भी मनाते हैं। तो ज़रूर ऊँच ते ऊँच प०पि०प० का अवतरण होता है। फिर श्री कृष्ण का अवतरण होना है। वो तो 84 जन्मों में आते हैं। बच्चों को यह प्वाइंट्स धारण कर फिर रिवाइज़ करना चाहिए। रिवाइज़ करने का समय भी सवेरे का अच्छा है। नशा रहना चाहिए हम हैं गॉड फादरली स्टूडेंट्स। कोई ने कब नहीं सुना। बरोबर भगवानुवाच्य है बच्चों प्रति। राजयोग सिखाते हैं; परन्तु कैसे, यह कुछ भी नहीं जानते। माया ने बुद्धू बना दिया है। तो जानवर से भी बदतर कहेंगे। इसलिए दिखाते हैं, बाप ने आकर बंदरों की सेना ली, रावण पर जीत पहनाई। शास्त्रों में तो क्या–2 लिख दिया है। यह भी किसको दोष नहीं दे सकते। यह तो जिन्होंने शास्त्र बनाय हैं उन्होंने लिख दिया है। तुम कहते हो परमात्मा सर्वव्यापी है। यह तो तुम गाली देते हो, अपन को भी और उनको भी। भगवान कुत्ते–बिल्ले सबमें हैं तो कुत्ते–बिल्ले का तुम बच्चा ठहरा। कितने अवतार बैठ दिखाए हैं। कच्छ–मच्छ अवतार, वाराह अवतार.....। बाप कहते हैं यह भी ड्रामा अनुसार नूँध है। हम तुमको सारा राज़ समझाते हैं और अपने साथ ले जाते हैं। तुम बन्दर से भी बदतर बन पड़े हो। 7/8 बच्चे पैदा कर लेते। आजकल तो बिच्छू के मुआफिक पेट चीर कर बच्चा निकालते हैं। सन्यासी भी कहते– स्त्री नर्क का द्वार है, सर्पणी है। समझते कुछ भी नहीं। अब बाप समझाते हैं, तुम सच्चे–2 पण्डे हो सारे भारत को लिबरेट करने वाले। इतना नशा रहना चाहिए। हम तो तुच्छ थे। बाबा हमको क्या से क्या बनाते हैं– मनुष्य से देवता। एकदम विश्व का मालिक बनाते हैं। ग्रंथ में भी महिमा गाई हुई है। मनुष्य ते देवता किये करत न लागे वार। वो तो सिर्फ महिमा गाते हैं। अच्छा, आज भोग भी है।